कार्यालय उपयोग हेतु

नाम (Name).....

पिता का नाम (Father's Name) .....

पता(Address).....

.....

ई-मेल (E-mail).....

शोध पत्र का शीर्षक (Title of the Paper).....

.....

1. एकात्म मानव दर्शन - एक सार्वभौमिक व्यावहारिक दर्शन ☐
2. एकात्म मानव दर्शन तथा आर्थिक विचार ☐
3. एकात्म मानव दर्शन, आरोग्य एवं पर्यावरण ☐
4. एकात्म मानव दर्शन, शिक्षा एवं शिक्षक ☐
5. एकात्म मानव दर्शन तथा अन्त्योदय ☐
6. दीनदयाल जी, उनका एकात्म मानव दर्शन तथा प्रबंधन ☐

दिनांक (Date).....

त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार

शोध पत्र आमन्त्रण

श्रद्धेय दीनदयाल उपाध्याय के युगानुकूल दर्शन के विभिन्न आयामों के अध्ययन एवं विश्लेषण हेतु **'दीनदयाल शोध केन्द्र' द्वारा छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय परिसर में त्रि-द्विवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी** आयोजित है। तदहेतु निम्न आयामों में आपके शोध-पत्र सादर आमंत्रित हैं :

1. एकात्म मानव दर्शन- एक सार्वभौमिक व्यावहारिक दर्शन
2. एकात्म मानव दर्शन तथा आर्थिक विचार
3. एकात्म मानव दर्शन, आरोग्य एवं पर्यावरण
4. एकात्म मानव दर्शन, शिक्षा एवं शिक्षक
5. एकात्म मानव दर्शन तथा अन्त्योदय
6. दीनदयाल जी, उनका एकात्म मानव दर्शन तथा प्रबन्धन

एकात्म मानव दर्शन आधारित उपरोक्त अंकित किसी आयाम पर शिक्षाविदों, चिन्तकों, प्राध्यापकों, समाजसेवियों तथा विश्वविद्यालयों-महाविद्यालयों के शोधार्थियों से शोध-पत्र हिन्दी अथवा अंग्रेजी में आमंत्रित किये जाते हैं। शोध-पत्र अधिकतम 3000 शब्दों में अंग्रेजी में M.S.Word Font Size 12, 1.5 Space में तथा हिन्दी में Bold Font size 14 में मुद्रित हों। शोध-पत्र की दो प्रतियां CD सहित दिनांक 08 नवम्बर 2017 तक डाक/ई-मेल द्वारा 'दीनदयाल शोध केन्द्र' कार्यालय को प्राप्त हो जानी चाहिये । स्तरीय शोध-पत्र स्मारिका में प्रकाशित किये जायेंगे।

संरक्षक मण्डल

मा. प्रो. जे. वी. वैशम्पायन
कुलपति

मा. वीरेन्द्र पराक्रमादित्य
CA

मा. प्रो. आर. सी. कटियार
प्रति कुलपति

मा. डा. ईश्वरचन्द्र गुप्त
पूर्व सांसद

मा. रामचन्द्र अवस्थी
कुल सचिव

मा. जगतवीर सिंह द्रोण
पूर्व सांसद/ पूर्व महापौर

मा. धीरेन्द्र द्विवेदी
वित्त अधिकारी

मा. प्रकाश खड़वड़कर
उद्योगपति

-आयोजन सचिव-

डा0 श्याम बाबू गुप्त (निदेशक-दीनदयाल शोध केन्द्र)
9415135164, 8299138652
पता- निदेशक, दीनदयाल शोध केन्द्र
छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर- 208024
E-mail- ddsk.csjmu@gmail.com

त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार

(संस्कृति मन्त्रालय भारत सरकार द्वारा प्रायोजित)

श्रद्धेय दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानव दर्शन के विभिन्न आयाम

दिनांक 15, 16, 17 नवम्बर 2017

आयोजक

दीनदयाल शोध केन्द्र
छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय
कल्याणपुर, कानपुर - 208024

'दीनदयाल शोध केन्द्र'
छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

विश्व में उन्नीसवीं शताब्दी में अनेक कलहपूर्ण विचारधाराओं ने जन्म लिया। इस शताब्दी में संघर्ष की अवधारणायें प्रस्तुत की गयीं। इसके परिणाम स्वरुप वंशवाद, मजहबवाद, जातिवाद, भाषावाद एवं क्षेत्रवाद जैसे विवाद प्रारम्भ हुये। संघर्ष का घिनौना रुप आज भी थमा नही है। अब यक्ष प्रश्न यह है कि क्या मानव सभ्यता इन संघर्षपूर्ण सैद्धान्तिक थपेड़ों के साथ पतित होने के लिए नियति द्वारा अभिशप्त है? यद्यपि आज के विद्वान, चिन्तक व अर्थशास्त्री संघर्ष की बातों को नकारने लगे हैं। ऐसे सुधी चिन्तकों का मत है 'वैश्वीकरण के इस युग में ऐसे विचारों का कोई स्थान नहीं।' चूंकि विभिन्न कारणों से सभ्यताओं के संघर्ष की दलील सही नही प्रतीत होती है इसलिये इसे '**सभ्य बनाम असभ्य**' संघर्ष का नाम देना चाहिये। संघर्ष उन लोगों के मध्य है जो सभ्य हैं और जो सभ्य नहीं हैं। सभ्य समाज लोकाचार और नियम कानून के आधार पर चलता है। प्रत्येक संस्कृति के उदार और सुसंस्कृत लोग नैतिकता, स्वतंत्रता और पारस्परिक सम्मान की रक्षा के लिये एक-दूसरे को जोड़ते हैं। आज के दौर में जब असभ्यता का उल्लेख होता है तो इसका अर्थ तकनीकी और आर्थिक मानकों पर कमजोर वर्ग से नहीं, अपितु यह विचारधारा आधारित असभ्यता है। वैचारिक असभ्यता आधुनिक जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है।

श्रद्धेय दीनदयाल जी ने सर्वप्रथम संघर्षों से मुक्ति का मार्ग खोजा। उन्होंने विश्व को '**सभ्यताओं के संघर्ष**' से निकाल कर '**विश्व सभ्यताओं का एक कुटुम्ब है**' के आधार पर '**भू-सांस्कृतिक राष्ट्रवाद**' की अवधारणा प्रस्तुत की।

सत्संकल्प लेकर विश्वविद्यालय की कार्य परिषद ने '**दीनदयाल शोध केन्द्र**' प्रारम्भ करने का निर्णय लिया था। उल्लेखनीय है कि दीनदयाल जी के सामाजिक जीवन का प्रारम्भ कानपुर से ही हुआ था।

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय में '**दीनदयाल शोध केन्द्र**' श्रद्धेय दीनदयाल उपाध्याय जी की स्मृति में एक पीठ के रुप में कार्य कर रहा है। दीनदयाल जी का सरल, सादा एवं मर्यादित जीवन अनुकरणीय है। वे एक युग ऋषि थे। निम्न मध्यम श्रेणी परिवार में जन्में तथा बाल्यकाल में ही माता-पिता की स्नेह छाया से वंचित दीनदयाल जी ने अविवाहित रहकर एक सन्यासी की भांति आजीवन भारतीय संस्कृति, राष्ट्र तथा समाज की सतत् सेवा की। उन्होंने तनावों से मुक्ति दिलाने वाला तथा वास्तविक सुख, शान्ति एवं समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करने वाला सिद्धान्त प्रतिपादित किया। वह व्यक्ति, समाज, सृष्टि तथा परमेष्टि में एकात्म स्थापित करने वाला परम वैभव-सम्पन्न, गौरवशाली समाज का निर्माण एकात्मिक जीवन शैली की आधार शिला पर करना चाहते थे। शोध केन्द्र विभिन्न प्रकल्पों के माध्यम से समाज को दिशा देने का कार्य कर रहा है।

दीनदयाल शोध केन्द्र
छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर
श्रद्धेय दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानव दर्शन के विभिन्न आयाम
त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार
दिनांक 15, 16, 17 नवम्बर 2017

पंजीकरण फार्म

नाम (Name).....

पदनाम (Designation).....

संस्थान/विश्वविद्यालय (Institute/University).....

.....

जन्मतिथि (Date Of Birth).....

मोबाइल नं. (Mobile).....

फोन नं. (Phone).....

ई-मेल (E-mail).....

शोध पत्र का शीर्षक (Title of the Paper).....

.....

.....

सह प्रस्तोता (यदि कोई हो) (Co-Author - If any).....

.....

प्रतिभागी हस्ताक्षर
(Signature of the Participant)